सागरों रंग मोहोलात मानिक पहाड़

नूर कुन्जी अगिन मुसाफकी, कले कुलफ खोलत हकीकत।
सुध पाइए सागर नूर पार की, हक मारफत रूहों खिलवत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम के अगिन कोन में श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का सागर नूर सागर है। कुरान के अन्दर श्री राजजी महाराज के स्वरूप के बारे में लिखा है कि खुदा खुद आकर अपने स्वरूप की पहचान कराएगा। इस छिपे रहस्य पर जो ताला पड़ा है उसको मैं जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की कुंजी से खोलती हूं जिससे श्री राजजी महाराज की शोभा तथा रूहों के खिलवत खाना की पहचान हो जाएगी।

नूर दखिन सुख सागर, नूर वाहेदत मुख नीर।
पाइए मारफत मुसाफ की, अर्स अंग असल सरीर।। २ ।।

श्री राजजी महाराज के तन ब्रह्मसृष्टियों के मुखारबिन्द का सागर नीर सागर है जो दक्षिण दिशा में है। कुरान में अर्श की मारफत में रूहों के असल तन होने का बयान है। इसके छिपे रहस्य को मैं खोलकर बताती हूं।

नूर नैरित अंग उजले, सोभा सुन्दर सागर खीर।
हक इलम देखावे उरफान, पिएं इस्क प्याले सूरधीर।। ३ ।।

रंग महल की नैरित दिशा में ब्रह्मसृष्टि के एकदिली के सुन्दर शोभा का खीर (क्षीर) सागर है। यह तारतम वाणी पहचान कराती है कि यह रूहें श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले बड़े आराम से पीती हैं।

नूर दधि सागर सीतल, नूर पछिम अंग पूरन।
ए सुख अतंत हमेसा, नूर वाहेदत पूर रोसन।। ४ ।।

रंग महल की पच्छिम की दिशा में हमेशा बेशुमार शीतल सुख देने वाला ब्रह्मसृष्टि के सुन्दर सिनगार का सागर दधि सागर है।

नूर वाइब–बल पूरन, नूर जहूर समन सागर।
परख पूरन सुख सुन्दर, सब बिध नूर नजर।। ५ ।।

रंग महल की वायब दिशा में घृत सागर है जो रूहों के भरपूर इश्क के बल का स्वरूप है। इससे सब तरह की पहचान हो जाती है और श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द नजर आने लगता है।

नूर मीठा मधु उत्तर, सुख अतंत अंगों अंग।
ए विध जाने रस रसना, उपजत इनके संग।। ६ ।।

रंग महल की उत्तर की दिशा में मीठा मधु का सागर, इलम का सागर है। जिससे रूहों के अंग-अंग के बेशुमार सुख मिलते हैं। इस हकीकत के रस का स्वाद रूहें ही जानती हैं।

नूर अमृत सागर ईसान, सुख सीतल सुन्दर।
नूर नजर भर देखिए, सुख सब बाहेर अन्दर।। ७ ।।

रंग महल के ईसान कोने में अमृत सागर (रस सागर) है जो सुख, शीतलता और सुन्दरता से भरपूर है। आत्मा की दृष्टि से देखें तो इस सागर में सब तरह के सुख भरे हैं (यह श्यामा महारानी के स्वरूप का सागर है)।

Nijanand App

नूर पूर सुख सागर, अतंत पूरव सुखदाए।
ए सबरस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों उपजाए।। ८ ।।

रंग महल की पूरब दिशा में बेहद सुख देने वाला सागर सर्वरस सागर है जिससे सब अंगों के हर प्रकार के सुखों की पूर्ति होती है। यह श्री राजजी महाराज की मेहर का सागर (श्री राजजी महाराज के स्वरूप का सागर) है।

ए तरफ आठों नूर सागर, अंग आवत नूर मुतलक।
ए देखतहीं सुख सागर, ए सहूर इलम नूर हक।। ९ ।।

रंग महल की आठों दिशाओं में यह आठ सागर हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से विचार करने पर अपार सुख मिलता है और श्री राजजी महाराज का स्वरूप हृदय में भर जाता है।

आठ तरफ जुदी जुदी जिमी, नूर एक से दूजी सरस।
नूर बीच जिमी बीच सागर, जिमी सिफत न पार अरस।। १० ।।

आठों सागरों के बीच में आठ अलग-अलग जमीन हैं जो एक-दूसरे से अधिक अच्छी लगती हैं। इन दो जमीनों के बीच सागर और दो सागरों के बीच जमीन की सिफत बेशुमार है।

पार जिमी ना पार सागर, नूर पाइए न काहू इंतहाए।
नूर जिमी देखो नूर सागर, नूर अपार अर्स गिरदवाए।। ११ ।।

यहां न जमीन का पारावार है, न सागर का और न सुन्दरता का ही अन्त है। इस जमीन के सागर के जो रंग महल की आठों दिशाओं में आए हैं, बेहद शोभा है।

नूर पसु पंखी नूर में, जिमी जुदी जुदी नई सिफत।
नई कहूं हिसाब इतके, ए नूर खूबी हमेसा अतंत।। १२ ।।

यहां के पशु, पक्षी, जमीन सब नूरमयी हैं जिनकी शोभा सुन्दरता हमेशा ही नई दिखती है। नई तो संसार के हिसाब से कही है। परमधाम तो नया पुराना होता ही नहीं। सदा एक रस रहता है।

पार न जिमी अर्स को, पार ना पसु जानवर।
पार नहीं बिरिख बाग को, पार ना पहाड़ सागर।। १३ ।।

परमधाम की जमीन, पशु, जानवर, वृक्ष, बाग, पहाड़, सागर सभी बेशुमार हैं।

सब सुख एक एक चीज में, सब की सिफत नहीं पार।
अर्स पहाड़ या तिनका, सब देखेही पाइए बेसुमार।। १४ ।।

परमधाम में सभी सुख एक ही चीज में मिल जाते हैं, इसलिए सभी की सिफत बेशुमार है। रंग महल हो या पहाड़ हो या तिनका हो, इन्हें देखते ही बेशुमार सुख मिल जाते हैं।

ए पाल आड़े जिमी सागर, नूर लगी रांग आसमान।
इंतहाए नहीं गिरद फिरवली, नूर सिफत कहा कहे जुबान।। १५ ।।

सागर और जमीन के बीच में पाल आई है जिसमें रांग की बड़ी मोहोलातें आसमान को छूने वाली बनी हैं। यह रांग की हवेली घेरकर आई है जिसकी शोभा बेशुमार है।

Nijanand App

नूर रांग तरफ जो देखिए, इंतहाए न कहूं आवत।
पार आवे जिन चीज को, तिनकी होए सिफत।। १६ ।।

रांग की सिफत का बयान यहां की जबान से नहीं होता, क्योंकि जो चीज सीमा में हो तो सिफत उसी की हो सकती है। यह रांग की हवेलियों की शोभा बेशुमार है।

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए।
सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहें।। १७ ।।

जिस चीज का अन्त ही न हो उसकी सिफत जबान से कैसे की जाए? जब सिफत शब्दों में नहीं आती तो फिर विचार कैसे करें?

हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अर्स अपार।
सो अर्स दिल मोमिन का, ए किन बिध कहूं सुमार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम की इस बेशुमार शोभा को शुमार में लाए हैं जिसे ब्रह्मसृष्टियों के दिल जिनमें श्री राजजी महाराज बैठे हैं, ही जानते हैं। मैं उनका वर्णन कैसे करूं?

ऐसे ही सागरों रांग के, बारे हजार द्वार।
और खूबी खुसाली ज्यों खिड़कियां, कहूं गिनती न आवे पार।। १९ ।।

सागरों के किनारे रांग की हर एक हवेली में बारह हजार दरवाजे और बेशुमार खूब खुशाली हैं। वैसे ही बेशुमार खिड़कियां हैं जिनकी किसी तरह से गिनतीं नहीं होती।

यों अर्स जिमी अपार के, सोभित गिरदवाए द्वार।
रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार।। २० ।।

परमधाम की जमीन ऐसी बेशुमार है। इसके चारों तरफ दरवाजे शोभा देते हैं। आत्मा की दृष्टि से देखो तो बेशुमार सुख मिलते हैं।

आठ तरफ नूर जिमी के, तरफ आठ नूर सागर।
ए गिन देख द्वार दिल अर्स में, पार न आवे क्यों ए कर।। २१ ।।

आठों तरफ नूरी जमीन है। आठों तरफ आठ नूरी सागर हैं। अर्श दिल से विचार करके इन दरवाजों को गिनकर देखो तो यह बेशुमार हैं।

नूर पार जिमी और रांग की, जो फेर देख रूह दिल।
कई पहाड़ मोहोल बाग नेहेरें, जिमी बराबर टेढ़ी न तिल।। २२ ।।

रांग के आगे की नूरी जमीन यदि रूह की नजर से देखें तो कई तरह के पहाड़, महल, बगीचे, नहरें दिखाई देती हैं यहां सब जमीन समतल है। तिल मात्र भी टेढ़ी नहीं है।

ज्यों फिरती थाल अर्स उज्जल, यों ही साफ सिफत बराबर।
अर्स जिमी कही नूर की, कहूं गढ़ा न ऊंची टेकर।। २३ ।।

परमधाम की जमीन एक गोल थाल के समान समतल है। इस नूरी जमीन में कहीं गड्ढा या टीला नहीं है।

Nijanand App

पार नहीं बीच थाल के, गिरदवाए ना चौड़ी तूल।
मोहोल पहाड़ नेहेरें सरभर, मुख सिफत कहा कहे बोल।। २४ ।।

इस थाल जैसी जमीन के बीच की शोभा बेशुमार है। यह चारों तरफ से गोलाकार है। जरा भी लम्बी चौड़ी नहीं है। इसके अन्दर महल, पहाड़, नहरें सब एक समान दिखाई देते हैं। मुख से इसकी महिमा कैसे कहूं?

तो नूर रांग पार की क्यों कहूं, जाको सुमार नहीं वार पार।
वह मोमिन देखें दिल अर्स में, जो दिल अर्स परवरदिगार।। २५ ।।

रांग की हवेलियों के पार की शोभा बेशुमार है। कैसे कहूं? जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज अर्श कर बैठे हैं, वही इस शोभा को देखते हैं।

कई जातें नूर पंखियन की, कई जातें नूर जानवर।
जैसा रंग नूर जिमी का, पसु पंखी रंग सरभर।। २६ ।।

यहां कई जाति के नूरी पक्षी, कई जाति के नूरी जानवर हैं। जिस रंग की नूरी जमीन है उसी रंग के पशु-पक्षी दिखाई देते हैं।

नए नए रंगों नूर बाग बन, इंतहाए नहीं बिरिख नूर।
ना इंतहाए नूर पसु पंखी, क्यों कहूं इन अंग जहूर।। २७ ।।

नए-नए रंगों से भरपूर नूर के बगीचे, वन, बेशुमार नूरी वृक्ष, बेशुमार नूरी पशु-पक्षी हैं। उनकी शोभा कैसे कहूं?

नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत।
कहूं जुबां अर्स गिनती, अंग अर्स के जानें सिफत।। २८ ।।

नूरी जमीन या इसकी लम्बाई-चौड़ाई का पार नहीं है। इसका बयान अर्श की जबान से और गिनती से कहूं तो परमधाम के अंग ही इसकी सिफत को जान सकते हैं।

एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर।
अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्यों ए कर।। २९ ।।

एक जमीन की सिफत देखें तो पूरी नूरी उम्र निकल जाए, फिर भी जमीन की सिफत का वर्णन किसी तरह से नहीं हो सकता।

नूर जिमी बराबर अर्स की, कहूं चढ़ती नहीं उतार।
दूजी सोभा नूर रोसन, जिमी भरी अम्बर झलकार।। ३० ।।

परमधाम की जमीन सब बराबर है। कहीं ऊंचाई-नीचाई नहीं है। इसकी शोभा, इसका तेज आसमान तक झलकता है।

कई रंग जिमी केती कहूं, और कई रंग नूर दरखत।
सोई जिमी रंग पसु पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत।। ३१ ।।

कई रंग की जमीन है और कई रंग के नूरी वृक्ष हैं। उसी रंग के पशु-पक्षी 'पिया पिया', 'तूही तूही' का जिक्र करते है।

Nijanand App

ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर।
मुख चोंच सुन्दर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के नामों की गिनती नहीं है। पक्षी श्री राजजी महाराज का जिक्र हर नाम से करते हैं। उनके मुख, चोंच सुन्दर लुभावने हैं। वह मिश्री जैसी बड़ी मीठी बोली बोलते हैं।

नूर वाउ चलत बहु विध की, सुगंध सोहत सीतल।
सब चीजें खुसबोए नूर पूर, जिमी मोहोल बन जल।। ३३ ।।

यहां पर बहुत तरह की शीतल सुगन्धित हवा चलती है जिससे सभी चीजें खुशबू से भरपूर हैं चाहे वह जमीन हो, महल हो, वन हो या जल हो।

फल फूल बन पसु पंखी बेहेकत, कोई चीज न बिना खुसबोए।
सदा सुगन्ध सबे सुख दायक, याकी सिफत किन बिध होए।। ३४ ।।

फल, फूल, वन, पशु, पक्षी सभी सुगन्धित हैं। बिना खुशबू के कोई चीज नहीं है। इनकी सुगन्धि बड़ी सुखदायक है। इसकी सिफत कैसे करें?

नूर चीज सब चेतन आसिक, बाए बादल बीज अम्बर।
सब बिध स्वाद पूर पूरन, सुख जाए ना कह्यो क्योंए कर।। ३५ ।।

यहां की सब चीजें नूरी है, चेतन हैं और इश्क से भरपूर हैं। हवा, बादल, बिजली, आकाश में सब तरह के स्वाद मिलते हैं। जिनके सुखों को कहना सम्भव नहीं है।

पार सोभा ना पार सागर, ना पार टापू ना इमारत।
पार टापू ना मोहोल किनारें मोहोल, सोभा आसमान नूर झलकत।। ३६ ।।

न सागर की शोभा का पार है, न टापू के महल का पार है और न रांग की हवेलियों का। सागर के अन्दर के टापू और किनारे पर बने रांग की हवेलियों की शोभा का नूर आसमान तक झलकता है।

अर्स सूर कई एक मोहोल में, तैसे मोहोल टापू अपार किनार।
एक मोहोल अम्बर कई बीच में, जुबां क्यों कहे गिनती सुमार।। ३७ ।।

परमधाम के एक ही महल में कई सूर्य चमकते हैं। वैसे ही टापू महल में तथा रांग की हवेलियों में एक-एक महल में कई आसमान की शोभा आती है। यहां की जबान से कैसे गिनती बताएं?

जो कोई होसी अंग अर्स की, और जागी होए हक इलम।
तो कछू बोए आवे इन सहूर की, जो करे मदत हक हुकम।। ३८ ।।

जो कोई परमधाम की अंगना हो और जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागी हो और उसे श्री राजजी महाराज का हुकम मदद करे, तो उसे इसकी कुछ पहचान हो सकती है।

पर जो स्वाद हक उरफान में, सो केहे ना सके जुबां इन अंग।
जो हक मेहर कर देवहीं, तो प्याले पीजे हक हादी संग।। ३९ ।।

पर जो स्वाद श्री राजजी महाराज की वाणी में है, वह इस अंग की जबान से कहने में नहीं आता। यदि श्री राजजी महाराज ही मेहर करके इश्क के प्याले दें तो श्री राजश्यामाजी के साथ आनन्द मिल सकता है।

Nijanand App

हक मेहेर बड़ी न्यामत, रूह जिन छोड़े एह उमेद।
ए फल सब बंदगीय का, जो कहे मुतलक अर्स भेद।।४०।।

श्री राजजी महाराज की मेहर ही बड़ी भारी न्यामत है, इसलिए रूहें इस उम्मीद को कभी नहीं छोड़तीं। यह सब उनकी बन्दगी का फल है जो परमधाम के छिपे रहस्यों को जाहिर करती हैं।

जिन दिल हुआ अर्स हक का, सोई लीजो इन अर्स सहूर।
कहे हक हुकम ए मोमिनों, नूर पर नूर सिर नूर।।४१।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज विराजमान हैं, वही इस अर्श का विचार करें। श्री महामतिजी मोमिनों से कहते हैं कि मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही बेहद पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत का वर्णन किया है।

इन नूर रांग की रोसनी, क्यों कहूं जुबां इन मुख।
द्वार द्वारी कलस कंगूरे, ए लें हक हुकमें मोमिन सुख।।४२।।

इन रांग की हवेलियों के नूर का तेज यहां की जबान से कैसे वर्णन करें? इन हवेलियों के द्वार, खिड़कियां, कलश, कंगूरों का सुख श्री रांजजी महाराज के हुकम से ही मोमिन लेते हैं।

दोए दोए गुरज बीच द्वार के, दो दो छोटी द्वारी के।
ए छोटे बड़े मेहेराब जो, सोभा क्यों कहूं सिफत ए।।४३।।

दो-दो गुर्जों के बीच बड़े दरवाजे हैं। जिनके बड़े मेहेराब और खिड़कियों के छोटे मेहेराबों की शोभा की सिफत कैसे कहूं?

सोभा देत देखाई आसमान में, ऊंची सीढ़ियों नहीं सुमार।
चार चार आगूं द्वार चबूतरे, दो दो बन के रंग नहीं पार।।४४।।

यह शोभा आसमान तक दिखाई देती है। जिनकी ऊंची सीढ़ियां बेशुमार हैं। हर एक दरवाजे के आगे चार चबूतरे दो ऊपर दो नीचे हैं। नीचे वाले दो चबूतरों पर लाल हरे रंग के वृक्षों की शोभा बेशुमार है।

दोए मुनारों लगते, कई छातें चबूतरों पर।
दोए बीच सीढ़ियां आगूं द्वार के, जुबां सिफत पोहोंचे क्यों कर।।४५।।

गुर्जों से लगते हुए जो ऊपर दो चबूतरे हैं उनकी छतें बेशुमार हैं। दोनों चबूतरों के बीच सीढ़ियां उतरती हैं जिसकी सिफत इस जबान से कैसे कहें?

बिरिख बाग आगूं सब चबूतरों, कई जुदे जुदे बागों रंग बन।
आगूं देत खूबी इन द्वारने, बन आसमान कियो रोसन।।४६।।

वृक्षों की, बागों की तथा दरवाजों के आगे चबूतरों की और बागों के अलग-अलग रंगों की खूबी इन दरवाजों के आगे है जिनके वनों की रोशनी आसमान तक जाती है।

सब बागों सोभित रस्ते, कहूं घट बढ़ नाहीं हार।
कई चौक मोहोल मन्दिरन के, कई गली चली बांध किनार।।४७।।

हर बगीचे में सुन्दर रास्ते हैं। इनकी कतारों में कहीं कमी-बेशी नहीं है। कई चौक, महल, मन्दिर और गलियां एक सीध में हैं।

Nijanand App

लाल जिमी नूर लाल बन, सोभित पसु नूर लाल।
लाल जानवर लाल पर, रंग फल फूल सब गुलाल।। ४८ ।।

दक्षिण दिशा में नीर सागर का रंग लाल है जिससे यहां की जमीन, वन, पशु, जानवर, फल, फूल सब लाल रंग के हैं।

नूर जरद जिमी जानवर, नूर पीले पसु जरद जोत।
फल फूल पीले बिरिख बेलियां, नूर पीला आकास उद्दोत।। ४९ ।।

नैरित दिशा में खीर सागर है जिसका रंग पीला है। यहां की जमीन, जानवर, पशु, फल, फूल, बेलि, वृक्ष तथा आकाश में सब जगह पीला रंग है।

नीली जिमी नूर पाच की, नूर नीले पसु जानवर।
नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर।। ५० ।।

पच्छिम की दिशा में दधि सागर का रंग हरा है। यहां की जमीन, पशु, जानवर, आसमान सब हरे हैं। इनकी खूबी कैसे बताएं?

सेत जिमी सेत पसु पंखी, नूर आकास उज्जल।
उज्जल नंग नूर सबे, बिरिख बेल सेत फूल फल।। ५१ ।।

रंग महल के अगिन कोने में नूर सागर का रंग सफेद है। यहां जमीन, पशु, पक्षी आकाश, वृक्ष, बेलि, फल, फूल सभी सफेद रंग के हैं।

नूर स्याम जिमी आसमान लग, नूर स्याम पसु पंखी नूर।
फल फूल स्याम नूर बिरिख बेली, नूर पसु पंखी सब जहूर।। ५२ ।।

रंग महल की उत्तर दिशा में मधु सागर है जिसका रंग काला है (इलम का सागर है)। यहां की जमीन, पशु, पक्षी, फल, फूल, वृक्ष, बेलि सब श्याम रंग के हैं।

नूर जिमी आसमानी आसमान नूर, रंग पसु पंखी नूर आसमान।
फल फूल बिरिख बेली सोई रंग, नूर सोभा जंग सके न भान।। ५३ ।।

रंग महल की वायब दिशा में घृत (इश्क) सागर है जिसका रंग आसमानी है। इस इश्क के सागर की जमीन, आसमान, पशु, पक्षी, फल, फूल, बेलि सब आसमानी रंग की हैं।

दस दस रंग बिरिख बेल में, फल फूल रंग दस दस।
रंग दस दस जिमी आकासें, नूर पसु पंखी याही रंग रस।। ५४ ।।

ईशान कोने में अमृत सागर (रस सागर) है। इसमें दस रंग हैं। यहां के वृक्ष, बेलें, फल, फूल, जमीन, आकाश, पशु, पक्षी सब दस रंग के हैं।

कई रंगों जिमी कई आकासें, पसु पंखी बन कई रंग।
सब चीजों सोभा सब आसमान, सोभा नूर सबों में जंग।। ५५ ।।

पूरब दिशा में मेहर सागर में सभी रंग हैं (श्री राजजी का सागर है)। यहां के आकाश, जमीन, पशु, पक्षी, वन सभी रंगों के हैं। सबकी शोभा के नूर की किरणें आपस में टकराती हैं।

Nijanand App

अगिन ईसान लाल नूर, पीत नीर रंग दखिन।
नैरित खीर नीला रंग, दधि सेत पछिम रोसन।। ५६ ।।

अगिन कोने और ईशान कोने में नूर सागर और रस सागर हैं जिनमें नूर सागर का रंग सफेद है और रस सागर में दस रंग हैं, परन्तु जब रूहें सिनगार सजाकर दधि सागर में खड़े होकर श्री राजजी और श्यामाजी की ओर देखती हैं तो सखियों के मुखारबिन्द की लालिमा से नूर सागर और रस सागर लाल रंग के दिखाई देते हैं। दक्षिण दिशा में नीर सागर का रंग लाल है। उसमें रूहों की एकदिली का सागर क्षीर सागर है जिसकी आभा पड़ने से रंग पीला दिखाई देता है। नैरित दिशा में क्षीर सागर में जिसका रंग पीला है, उसमें सखियों के सिनगार की शोभा का सागर जिसका रंग हरा है की आभा पड़ने से क्षीर सागर हरा दिखाई देता है। पच्छिम दिशा में दधि सागर जिसका रंग हरा है सखियों के सिनगार का सागर है। सखियां जब सिनगार सजाकर खड़ी होती हैं तो श्री राजजी महाराज नूर सागर से उनको देखते हैं और तब दधि सागर का रंग बदलकर सफेद हो जाता है।

घृत वाइवबल स्याम रंग, रंग आसमानी मधु उत्तर।
दस रंग अमृत ईसान, रस पूरव रंग सरभर।। ५७ ।।

वायब दिशा में घृत सागर का रंग आसमानी है जो रूहों के इश्क का सागर है। इसमें श्री राजजी महाराज के इलम के सागर की आभा पड़ती है जिससे उसका रंग काला दिखाई देता है। उत्तर की दिशा में श्री राजजी महाराज के इलम का मधु सागर है जिसका रंग काला है, परन्तु घृत सागर (इश्क का सागर) का रंग आसमानी है और यह रूहों के इश्क का सागर है। इसकी आभा पड़ने से मधु सागर का रंग आसमानी दिखाई देता है। ईशान कोने में श्री श्यामा महारानी का सागर है जिसमें दस रंग हैं तथा पूरब दिशा में सर्वरस सागर (मेहर सागर) है जिसमें सब तरह के रंग हैं।

ए-साफ अगिन नूर उज्जल, दखिन नीर रंग लाल।
नैरित खीर पीत रंग, दधि पछिम नीला कमाल।। ५८ ।।

वैसे अगिन कोने में नूर सागर का रंग उज्ज्वल व सफेद है। नीर सागर जो दक्षिण दिशा में है, उसका रंग लाल है। नैरित दिशा में क्षीर सागर का रंग पीला है। पच्छिम दिशा में दधि सागर का रंग सुन्दर हरा कमाल का है।

रंग जिमी दिस सागर, एक एक दोए बीच जान।
ले इस्क गिन अगिन से, ज्यों सब होए अर्स पेहेचान।। ५९ ।।

जमीन के ऊपर हर एक दिशा में दोनों तरफ के सागरों की छाया आती है, इसलिए आधी जमीन एक रंग की और आधी जमीन दूसरे रंग की दिखाई पड़ती है। इस तरह से अगिन कोने से गिनकर आखिर तक, अर्थात् मेहर सागर तक एक ऐसी ही शोभा जानो! हे रूहो! इश्क लेकर अपने परमधाम को देखो तो सब पहचान हो जाएगी।

नूर नीर खीर दधि सागर, घृत मधु एक ठौर।
रस सब रस सागर, बिना मोमिन न पावे कोई और।। ६० ।।

नूर सागर, नीर सागर, क्षीर सागर, दधि सागर, घृत सागर, मधु सागर, रस सागर और सर्वरस सागर सब एक ही ठौर हैं। यह सुख मोमिनों के बिना और किसी दूसरे को नहीं मिलते।

Nijanand App

दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।। ६१ ।।

दो सागरों के बीच एक जमीन है। इस तरह से दो जमीनों के बीच एक सागर है। इस तरह से आठ सागरों के बीच आठ जमीन हैं। गिनकर देखी जा सकती हैं।

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार।
देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार।। ६२ ।।

सागर और बड़ी रांग की परे की जमीन जो घेरकर आई है, की शोभा बेशुमार है। जमीन को देखो या सागर को देखो। इनकी सिफत बेशुमार है। गिनती नहीं हो सकती।

और कही जो बिध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान।। ६३ ।।

और रांग की हवेली की जो हकीकत बताई है, उनके कलश, कंगूरे आसमान को छूते दिखाई पड़ते हैं। दरवाजे, खिड़कियों की गिनती तो बताई है, परन्तु इन हवेलियों की सिफत कैसे बयान करें (हकीकत कैसे बताएं)?

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। २४५४ ।।

मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मानिक पहाड़ में मानिक महलों को देखो जिनके दरवाजे बारह हजार बताए हैं। इनकी शोभा और सुन्दरता बयान करने में नहीं आती।

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार।। २ ।।

एक मानिक महल देखने पर बड़े दरवाजे बारह हजार दिखाई देते हैं। छोटे दरवाजों का तो पार ही नहीं है। इनकी शोभा और सिफत बेशुमार है।

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें।। ३ ।।

जमीन से ऊपर मानिक महल तक सभी महलों की, जल की, वन की, हिंडोलों की शोभा एक समान है। कहीं कम-ज्यादा नहीं है।

कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित।
ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत।। ४ ।।

कई जगह नहरें और कई जगह चादरें (जल की मोटी धारा) गिरती हैं। कई जगह फल, फूल, वन शोभा देते हैं। ऊपर के तालाब झरोखों से देखने से बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

Nijanand App